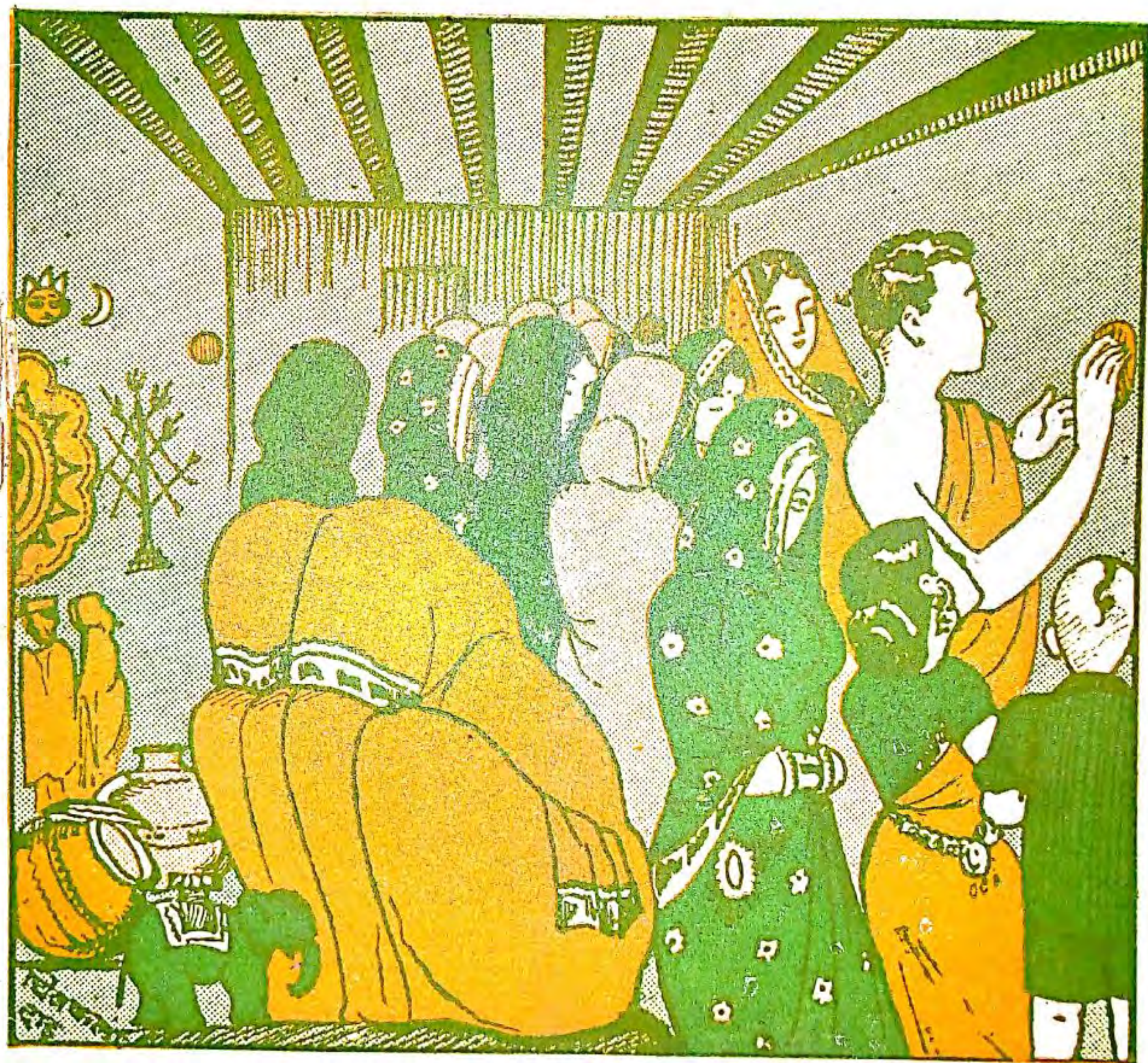
नैना-जोगिन



—श्री राजेश्वर झा

नैना-जोगिन

लेखक
श्री राजेश्वर झा
बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना-१

प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान, पटना-१

नैना-जोगिन

*

प्रकाशक :

मैथिली साहित्य संस्थान,

पटना-१

*

विद्यापति-स्मृति-पर्व, ८ नवम्बर, १९७३

*

मुद्रक :

कमल प्रिन्टिंग प्रेस,

नयाटोला, पटना-४

*

मुल्य — १ टाका २५ पाइ

प्राक्कथन

नैना-जोगिन मिथिला मे विवाहकालक एक गोट विध थिक जकर सम्बन्ध नयन-वशीकरण सँ अछि। नैना शब्दक सम्बन्ध नयन या नयना और जोगिनक सम्बन्ध योगिनी शब्द सँ अछि। मिथिलाक संस्कृति मे 'डाइन-जोगिन, शब्दक प्रयोग बड़ विचित्र विपर्यय मे पाओल जाइछ। वज्रयान ग्रन्थ मे डाइनक (डाइणिक) अर्थ तांत्रिक साधिका जे सहज ज्ञानक स्वामिनी भए या तँ स्वतः योग साधना मे प्रवृत्त रहैछ वा कोनो साधक कें प्रवृत्त करवैछ कएल गेल अछि। वज्र-तंत्रक निम्नलिखित पद्य मे :—

खिति जल पवण हुतासन सुण्ण डाइणि देवी
सुनहु पचमु तत्त् कहु जोण जाणइ केवि।

डाइन कें देवी कहि सम्बोधन कएल गेल अछि। डाइन स्त्री कें लोग ओकर गुह्य श्मशानक अनुष्ठान आदिक कारणें प्रारम्भे सँ भयक दृष्टियें देखैछ तथा मारण, मोहन, उच्चाटण आदिक प्रयोगक कारणे समाज मध्य ओकरा गर्हित मानैछ। फलस्वरूप कबीर तांत्रिक अर्थ कें बिसरि ओकर मायाक अपमान मानि शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि कें ओकर पाँच पुत्र कहि एवंक्रमें उल्लेख कएलनि अछि :—

इक डाइन मेरे मन में बसे रे,
नित उठि मेरे जिय कों डसै रे,
या डाइन के लरिका पाँच रे,
निस दिन मोहि नचावै नाच रे।

जोगिन शब्दक सम्बन्ध योग-साधना मे प्रवृत्त ओहि साधिका सँ अछि जे प्रधानतः मुद्राक रूप मे प्रयुक्त होइत छल जकरा तांत्रिकाचार्य अपन उपभोगक वस्तु बुझैत छलाह। कालक्रमें योग मे भोगक प्रवृत्तिक उदय भेल तथा स्त्री परमार्थक सोपान मानए जाए लगलीह तथा जोगीक संग जोगिन जल और नोनसन परस्पर मिलि एकाकार भए हुनकर महामुद्रा, गृहणी, जोगिन आदि नाम कें धारण कएलीह।

जोगी और जोगिनक पारस्परिक कामरूपताक सम्बन्ध तेहेन ने प्रवल भेल जे पश्चात वियोगावस्था मे जोगी-जोगिनक अभिलाषाजन्य प्रणयाकुलता विलापक रूप में प्रकट होमय लागल। जायसीक निम्नलिखित वाक्य मे जोगी-जोगिनक प्रणय प्रसंगक संकेत उपलब्ध अछि :—

अब को हमहि करिहि भोगिनी,
हमहूँ साथ होयव योगिनी।

एहि तरहें योग और गुह्य तंत्रसाधनाक सम्पूर्ण परम्परा सँ पृथक भए जोगिन भाव-साधनाक विरहिणिक उपमान भए अपन प्रियतमकें जोगीक रूप मे और स्वतः जोगिनक रूप मे परिकल्पित भेलीह जकर दिग्दर्शन मीराक पद्य मे पाओल जाइछ। एवंक्रमें तंत्रसाधनाक जोगिन तँ पश्चात बौद्ध तांत्रिक रूप कें पूर्णतः बिसरि कृष्णक गोपी बनि गेलीह तथा वैष्णव-भाव साधना मे

रमि भक्ति मे लीन भए गेलीह किन्तु डाइन अपन पूर्वक कलेवर कें ओहिना अक्षुण्ण राखि अपन गुह्य तंत्र-साधना एवं मारण, मोहन, उच्चाटन आदिक प्रयोगक कारणें अहुखन भयक दृष्टियें देखल जाइछ।

नैना-जोगिनक सम्बन्ध इतिहास सँ अछि। नवम-दशम शताब्दी मे एक दिशि तँ तांत्रिक साधना मे स्त्रीक प्रधानता कें दोहाय देल गेल और दोसर दिशि औपनिषदिक विचारधाराक पुनर्प्रचार भेला सन्ता स्त्री कें भ्रान्तिक मूल एवं मुक्तिक वाधक कहि उपहास कएल गेल। प्राय: एहि विचारधाराकें अपनाए लोक उपनिषदक प्रवाह मे प्रवाहित होमय लागल तथा स्त्री कें गराक घेघ बुझि ओकरा सँ फड़ाक रहबाक उपक्रम करए लागल। फलस्वरूप वशीकरणक आवश्यकता प्रतीत भेल जकर प्रतिफल नैना-जोगिनक विध थिक। नैना कामरूपक सफल जोगिन छलीह जकर पूर्ण प्रभाव मिथिलाक जन-जीवन पर छल।

मिथिलाक संस्कृति कें दृष्टिकोण मे राखि नैना-जोगिन जे आब केवल विध-व्यवहार मे अछि, लिखल अछि। यद्यपि एहि सँ सम्बद्ध सभ तथ्यक विश्लेषण करवा मे हम समर्थ नहि भए सकलहुँ तथापि ई हमर प्रयासमात्र थिक तथा विद्वद्गण सँ हमर आग्रह अछि जे एकर विश्लेषण कए एहि पर पूर्ण प्रकाश देवाक कष्ट करथि।

—राजेश्वर झा

विद्यापति-स्मृति-पर्व
८ नवम्बर, १९७३

नैना-जोगिन

गौतम-सूत्रक आठम अध्याय मे जाहि अड़तालीस गोट संस्कारक वर्णन अछि ओहि मे विवाहक नाम सेहो पाओल जाइछ। ई संस्कार अतिशयाधान रूप थिक। पत्नीक देह, प्राण, मन आदि केँ पतिक देह, प्राण, मन आदि सँ जोड़ब एहि संस्कारक लक्ष्य थिक। अतएव ब्रह्मवर्चस (जात्याभिमान), यश, निद्रा, क्रोध, आत्मश्लाघा, आत्मसौंदर्य तथा सुगन्धि सँ सर्वदा पृथक रहनिहार ब्रह्मचारी जे अथर्ववेद एवं शतपथ ब्राह्मणक अनुसार जँ अपना केँ मृगचर्म सँ आच्छादित कएने रहैछ तँ ब्रह्मवर्चसम् केँ प्राप्त करैछ; जँ अपन गुरुक निमित्त कार्य करैछ तँ हुनकर प्रसिद्धि केँ; जँ सुतलहु मे निद्रा सँ पृथक रहैछ तँ अजगरक निद्रा केँ; जँ मनमे नम्र भए क्रोध सँ ककरहु क्षति नहि पहुँचवैछ तँ सुगरक क्रोध केँ; जँ जल मे कुचेष्टा नहि करैछ तँ जल-श्लाघा केँ; जँ नग्न स्त्री केँ नहि देखैछ तँ ओकर सौंदर्य केँ प्राप्त करैछ तथा जँ ओ वनस्पति तथा वृक्ष केँ नहि काटि सुँघैत अछि तँ ओ स्वतः सुगन्धि सँ परिपूर्ण होइछ। एवंक्रमेँ अथर्ववेदक— "देवानामेतत्परिषुतमनभ्यारूढं चरतिरोचमानम्"वाक्यक "देवानां परिषुतम्" अर्थात् जनिका देवतालोकनि गतिमान बनौलनि ओहि ब्रह्मचारी केँ पाणिनिक "ऋषां" और "हृद्य" शब्द जकरा भाष्यकार "हृदयस्य बन्धनः" अर्थात्"हृदय केँ बान्हय बाला" वशीकरण अर्थ कयलनि अछि ओ कोना प्रभावित होइछ ओकर प्रत्यक्ष दिग्दर्शन मिथिलाक वैवाहिक रीति-रेवाज मे होइत अछि।

मिथिलाक-संस्कृति मे समन्वयात्मक भावना बड़ प्रवल अछि। एक दिशि तँ सृष्टिक रहस्यमयी प्रक्रियाक व्याख्या वेदक विभिन्न विद्याक रूप मे उपलब्ध अछि और दोसर दिशि लौकिक संस्कृतिक तथ्यात्मक स्वीकृति अनादि और अनन्त रूप मे प्रचलित लौकिक व्यवहार मे उपलब्ध अछि जेकरा सवर्था शास्त्र सँ पृथक राखल तँ गेल किन्तु संस्कृतिक आधारशीला बनले रहल।

स्त्री-पुरुषक उत्पत्तिक प्रसंग मे अक्षर पुरुषक निरूपण मे कहल गेल प्रक्रियाक अनुसार जखन इन्द्र अक्षर पुरुषक द्वारा चारू दिशि प्राण प्रसारित करैत छथि तँ एक दिशि गेनहार प्राणक समूह सँ एक मनु नामक प्राण पृथक बनि जाइछ जे वृत्ताकार नहि भए अर्द्धवृत्ताकार प्रलम्बरूप मे बनैत अछि जकरा अर्द्धेन्दु कहल चाइछ। एकर (१) अग्नेय प्राण और (२) सौम्य प्राण दुई गोट भेद अछि। अग्नेय प्राण पुरुष और सौम्य प्राण स्त्री थिक। एकरहि प्रधानता सँ प्राणीमात्र मे पुरुष और स्त्री दुई गोट भेद अछि। एहि तथ्य केँ वृहदारण्यकोपनिषद् मे एवंक्रमेँ कहल गेल अछि :—

प्रजापति अपन शरीर केँ दुई भाग मे विभक्त कएल जे पति और पत्नीक रूप भेल। पृथक रूपेँ सृष्टि करबा मे ई दुहु जखन असमर्थ भेल तँ विवाह द्वारा ई दुहु संयोजित भए एक दोसरा केँ पूर्ण कए सृष्टि प्रक्रिया मे समर्थ होइछ। अतएव प्राणीक सृष्टि केँ मैथुनी सृष्टि कहल जाइछ।

स्त्री और पुरुष यद्धपि स्वरूपेँ एक दोसरा सँ भिन्न अछि किन्तु एहि दुहुक पारस्परिक सम्पर्कता सँ एहि दुहु मे परिवर्तन अबैछ। फलस्वरूप सभ्यताक प्रारम्भे सँ पुरुष-स्त्रीक व्यापक सम्बन्ध केँ चिरस्थायी रूपक हेतु विविध अभिचारक निरूपणक उल्लेख उपलब्ध अछि।

अथर्ववेद मे अनुष्ठानक योजना मे एक पृथक क्रियाक वर्णन सन्निहित अछि जकरा "स्त्रीकर्म" वा 'स्त्री-कर्माणि' कहल गेल अछि। ऋग्वेद मे

"हृद्य-संवनन्" तथा वशीकरण शब्दक उल्लेख पाओल जाइछ। सामविधान ब्राह्मण मे सेहो एहि तरहक मंत्र अछि जकरा सायण "वशीकर" शब्द कहि प्रयुक्त कएलनि अछि।

अथर्ववेदक निम्नलिखित मंत्र—

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम् वाससा।
यथासो मम् केवलो नान्यासा कीर्तयाश्चन॥

मे वधु वर सँ कहैत अछि जे ओ अपन आँचर सँ हुनका झाँपैत अछि जे ओ मात्र ओकरहि टा बनल रहौक तथा आन स्त्री दिशि फुटलो आँखि सँ नहि ताकौक।

स्त्री-पुरुषक पारस्परिक सम्बन्धक प्रसंग मे यद्यपि ब्राह्मण ग्रन्थ, श्रौतसूत्र, संहिता एवं उपनिषद् आदि मे उपलब्ध अछि किन्तु तंत्र ग्रन्थ मे स्त्री-वश्य तथा पति-वश्यक कतिपय मंत्र एवं टोना पाओल जाइछ। मिथिला मे वैवाहिक रीति - रेवाजक सम्बन्ध पूर्णतः तंत्रहि सँ अछि।

"वर" शब्द "वर्चस" शब्दक परिवर्तित रूप थिक। मैथिल संस्कृतिक अनुसार वटुक केँ वेदक अध्ययन उपनयनक अनन्तरे अबैछ। वेद परब्रह्म या ईश्वरक प्रधान रूप केँ वर्णन करैत अछि। ईश्वर तेज, अप (जल), तथा अन्न (पृथ्वी) एहि तीनू तत्व केँ सूक्ष्म रूप मे उत्पन्न कए पुनि एहि तीनू केँ परस्पर मिलाए प्रत्येक केँ त्रिवृत्त (तीन लड़ि) कए ओहि मे स्वयं शक्ति रूप मे प्रविष्ट भेलाह। एहि तत्व केँ यज्ञोपवीतक रूप मे राखल गेल जे प्रथम तँ तीन-तीन सूत्रक और पश्चात पुनः ओकरा बाँटि तीन-तीन केँ पृथक बनाओल जाइछ तथा पुनः एकत्रित कए ओहि मे ईश्वरक स्थितिक संकेतक हेतु एक गोट ब्रह्मग्रन्थि लगाओल जाइछ जकर सम्बन्ध सृष्टि रचनाक प्रतीकक रूप मे अछि। अतएव वर केँ अभिचार, टोना तथा तांत्रिक प्रक्रिया द्वारा

वशीकरण तथा संमोहनक प्रयोग सँ मोहित कएल जाइछ। एहि क्रियाक संपादन विधिकरीक द्वारा होइछ जे आसन, प्राणायाम तथा तांत्रिक साधना मे दक्ष रहैत अछि।

कन्याक गृह अएला पर विवाह सँ पूर्व सर्वप्रथम वर केँ एक गोट चौकी पर बैसाओल जाइछ जकर तात्पर्य सिद्धासन, पद्मासन, वज्रासन आदि आसन सँ अछि। एहि सँ वरक आचरण, संहिता एवं कुलाचारक संकेत प्राप्त होइछ। तदुपरान्त वर केँ ब्रह्मचर्य सँ पतन एवं वशीकरणक हेतु कन्याक आँठि पान खेवाक हेतु देल जाइछ। एकर सम्बन्ध उच्छिष्ट चाण्डालिनी सँ थिक जकर एवंक्रमक मंत्र अछि :—

ओं ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालिनी
सुमुखि देवी महा पिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः
सर्व वशं करि स्वाहा।

आँठि खुयेबाक तात्पर्य वशीकरण सँ अछि। एहि दृष्टिकोण केँ अपनाए स्त्री, मृत, कुकुर इत्यादि केँ वशवर्त्ती बनेवाक निमित्त आँठि खुयेबाक परम्पराक प्रचलन भेल।

तत्पश्चात् वरक नेत्र मे आँजन लगाओल जाइछ। एहि सँ निहित तथा परोक्ष सत्ता एवं वस्तु केँ देखवाक शक्ति प्राप्त होइछ। एकर उपरान्त विधिकरी वरक गरदनि मे दोपट्टा वाँधि नाक धय आँगन लए जाइछ। नाक धरवाक सम्बन्ध प्राणायाम सँ थिक जकर तात्पर्य पूरक, कुम्भक तथा रेचक योग सँ अछि। पूरक तथा कुम्भकक सम्बन्ध चन्द्र (ललना) एवं सूर्य (रसना) आदि सँ थिक। ललना वाम नासापुटक समीप अछि जे चन्द्र स्वभावक तथा प्रज्ञारूप अछि। रसना दक्षिण नासापुटक समीप अछि जे सूर्य स्वभावक उपायरूप अछि।

प्राणायाम श्वासक परिग्रहण तथा परित्यागक विच्छेद कें कहल जाइछ। श्वासाक स्थिति अर्थात् परित्याग, परिग्रहण तथा अवरोधन सँ स्थान, समय और संख्याक बोध होइछ जकर सम्बन्ध, पूरक, कुम्भक तथा रेचक सँ थिक। श्वासाक प्रचलन शान्त तथा स्वाभाविक होयब आवश्यक थिक। एहि प्रसंगक एवंक्रमक गति पाओल जाइछ :—

शिर सँ मुकुट उतारल काँख दबाओल हे।
माई हे लए पटकि गृमहार नाक धए आनल हे।
दुधहि चरण पखारल निरखि निहारल हे।
माई हे अइहब आँजन आँखि विहि निरमाओल हे।
धन्य धन्य भाग्य श्री जानकी पद गाओल हे।

उपर्युक्त प्रणाली सँ कुल आचरण एवं योग्यताक परीक्षाक उपरान्त विधिकरी वर कें बक, भालरि तथा व्यसन देखवैत अछि जकरा सभहक सम्बन्ध गार्हस्थ्य जीवन सँ थिक। ठक ओ माया थिक जकर मनमोहिनी रूप एतेक प्रबलतम होइछ जकरा फाँस मे परि भ्रम, मोह आदि विकार सँ रहित प्राणियो बक बनि जाइछ। माया कें ठकक रूप मे एवंक्रमें पलटू तथा कबीरदास वर्णन कएलनि अछि :—

माया ठगिनी जग ठगा इहकैं ठगा न कोय।
पलटू यहि कें सो ठगे जो साँचा भक्ता होय॥

तथा

माया तो ठगिनी भई ठगे फिरै सब देश।
जा ठग या ठगनी ठगी ता ठग को आदेश॥

वस्तुतः मनुष्य केँ अपना मे पूर्णतः आशक्त कए ओकर आत्मविस्मृतिक निमित्त भेल मायाक मोह विवेक-शून्य एवं आतुर बनाए तृष्णाक वश भए ओ त्रषित भए भालरि सन कँपैत रहैछ ।

एहि संदर्भ मे निम्नलिखित गीत गेबाक परिपाटी अछि :—

सुनु सुनु हे सखि,
भोला छथि बैसल परिछन काल,
गला शोभै छनि चित चोरक हार,
बसहा चढ़ल बूढ़ एला कैलास सँ,
बैसला मैनाक दुआरि हे
सुनु सुनु बहिना चिन्हयो ने जानथि वर हे,
हम ने बियाहब बूढ़बा केँ ।
बाघ छाल देखि देह सिहरि गेल
जीह मोर थर-थर काँपय हे,
गहुमन, धामन, साँखर देखि कए
सभ सखी सभ भागए हे,
देखु देखु सखी सभ देखु देखु सखी सभ,
बुझबो ने करथि ठक बक बेसन के
हम ने बियाहब गौरी सँ ।
हाथ त्रिसुल तीन नेत्र विराजे चम चम
चन्द्र देखाए हे,
बसहा पकड़ि भोला नाचै छथि भूत प्रेत
ताल मिलावए हे,

आऊ आऊ बहिना चिन्हबो ने करै छथि
भालरि हे।

हम नय बियाहव गौरी सँ कंठ में छनि जहर हे॥

एकर उपरान्त वर केँ नव वस्त्र पहिराओल जाइछ जकर एवंक्रमक गीत अछि :—

पहिरणक वस्त्र उतारु यौ वर
करु नव वस्त्रक धारण यौ,
बिना नव वसन नव धारण यौ वर,
नहि होयत विधि व्यवहार यौ।
लगन बीतैत अछि भोर भेल राति यौ।
हठ छोड़ू माँगू दहेज ससुर छथि बैसल,
देताह कंचन हजार यौ।
कमर खोलाय सुनैना नानी,
देतीह मुक्ता माणिक हार यौ।
सुनि नेमी वयन रघुनन्दन पहिरल
वस्त्र सम्हारि यौ।

तदुपरान्त अठोंगर कुटवाक परम्परा अछि। अठोंगर अष्ट मुद्गरक परिवर्तित रूप थिक। मुद् धातुक अर्थ मिलाएब होइछ। ब्रह्मचर्यक उपरान्त गार्हस्थ्य धर्म मे ब्रह्मचारी केँ आठ गोटा ज़कर तात्पर्य अष्टमूर्ति वा अष्टधर महादेव सँ अछि जकर अर्थ पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सुर्य, चन्द्र तथा ऋत्विज होइछ बर केँ ओहि विराट् पुरुषक सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष तथा सहस्रपातक संग मिश्रण करैत अछि। अठोंगरक सम्बन्ध ऋग्वेदक पुरुषसूक्त सँ अछि जकर मंत्र एवंक्रमक अछि —

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥४॥
तस्माद्विरडाजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥
यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत् ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥७॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृष्दाज्यम् ।
पशून् तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्यांश्च ये ॥८॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥९॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥१०॥
यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरु पादा उच्यते ॥११॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥१२॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥१३॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन् ॥१४॥
सप्तास्यासन परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

(श्लोकार्थ)

(१) विराट् पुरुष (ईश्वर) सहस्र (अनन्त) शिर, अनन्त चक्षु तथा अनन्त चरण सँ युक्त छथि। ओ ब्रह्माण्ड केँ चारू दिशि सँ व्याप्त कए दश अङ्गुलीय परिमाण मे अधिक भए अर्थात् ब्रह्माण्ड सँ बाहरो व्याप्त भए अवस्थित छथि ।

(२) जे किछु भेल अछि तथा जे किछु होयत ओ सभटा ईश्वरे (पुरुष) थिकाह। ओ देवताक स्वामी थिकाह किएक तँ ओ प्राणिमात्रक भोग्यक निमित्त अपन कारणावस्था केँ छोड़ि जगदावस्था के प्राप्त करैत छथि।

(३) ई सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हुनक महिमा थिक जे स्वतः अपन महिमो सँ पैघ छथि। एहि पुरुषक एकहि पाद (अंश) ई ब्रह्माण्ड थिक। हिनकर अविनाशी तीन पाद तँ दिव्य लोक मे अछि ।

(४) तीन पादक पुरुष ऊपर (दिव्य लोक मे) उठल और एक गोट पाद एतए रहल जे अनन्त रूप सँ चेतन और अचेतन पदार्थहु मे विविध रूपें व्याप्त भेलाह ।

(५) ओहि आदि पुरुष सँ विराट् (ब्रह्माण्ड शरीर) उत्पन्न भेल तथा ओहि ब्रह्माण्ड शरीरक आश्रय प्राप्त कए जीव रूप सँ पुरुष उत्पन्न भेलाह। ओ देवता-मनुष्यादि रूप भेलाह जे धरातल तथा जीवधारीक शरीर कें बनौलनि।

(६) जखन पुरुष रूप मानस हवि सँ देवतालोकनि मासिक यज्ञ कएल तँ ओहि यज्ञ मे वसंतरूप घी, ग्रीष्म स्वरूप काठ तथा शरद रूप हव्य सँ कल्पित भेल।

(७) जे सभ सँ पहिने उत्पन्न भेलाह हुनकहि यज्ञ साधक पुरुष के यज्ञीय-पशु-रूपें मानस यज्ञ मे देल गेल। ओहि पुरुषक द्वारा देवता, साध्यगण (प्रजापति आदि) तथा ऋषिलोकनि यज्ञ कएलनि।

(८) जाहि यज्ञ मे सर्वात्मक पुरुषक हवन होइछ ओहि मानस यज्ञ सँ दधि-मिश्रित घृतादि उत्पन्न भेल। ओहि सँ वायु देवगणक वन्य एवं ग्राम्य पशु उत्पन्न भेल।

(९) सर्वात्मक पुरुषक होम सँ युक्त ओहि यज्ञ सँ ऋतु तथा साम उत्पन्न भेल। ओहि सँ गायत्री आदि छन्द तथा यजुक उत्पत्ति भेल।

(१०) ओहि यज्ञ सँ अश्व एवं आन-आन ऊपर-नीचाँ दाँतक पशु तथा गाय, अज और मेष उत्पन्न भेल।

(११) जे विराट् पुरुष उत्पन्न कएल गेलाह ओ कोन प्रकारेँ उत्पन्न भेलाह तथा हुनकर मुँह, दुई गोट हाथ, दुई गोट कान और दुई गोट चरण कोन-कोन भेल ?

(१२) हुनकर मुँह ब्राह्मण भेल। दुहु बाँहि सँ क्षत्रिय बनल। दुई उरु सँ वैश्य तथा पायर सँ शुद्र बनल।

(१३) पुरुषक मन सँ चन्द्रमा, नेत्र सँ सूर्य, मुँह सँ इन्द्र तथा अग्नि और प्राण सँ वायु उत्पन्न भेलाह।

(१४) पुरुषक नाभि सँ अन्तरिक्ष, शिर सँ द्यौ (स्वर्ग), चरण सँ भूमि, श्रोत्र सँ दिशादि भुवन बनल।

(१५) प्रजापतिक प्राणादिरूप कें देवतालोकनि मानसिक यज्ञक सम्पादनकाल मे जखन पुरुषरूप पशु कें बाँधलनि तँ ओहि समय सात परिधि (ऐष्टिक और आहवनीयक तीन और उत्तर वेदीक तीन वेदी तथा एक आदित्य वेदी आदि सात परिधि वा सात छंद) बनल तथा एक्कैस (बारह मास, पाँच ऋतु, तीन लोक और आदित्य) यज्ञीय काष्ठ वा समिधा बनल।

(१६) देवतालोकनि यज्ञ (मानसिक संकल्प) क द्वारा जे यज्ञ कएलनि वा पुरुषक पूजा कएलनि ओहि सँ जगतरूप विकारसमूहक धारक एवं मुख्य धर्म भेल। जाहि स्वर्ग मे प्राचीन साध्य (देवजाति विशेष) तथा देवता छथि ओकरा उपासक महात्मालोकनि प्राप्त करैत छथि।

अठोंगर कूटवाकालक एहि तरहक गीत अछि :—

चितचोरवा आजु बन्हैलनि हे
एहि चितचोरवा कें शिर मणि मउरबा
छोरवा छवि छहरौलनि हे।
एहि चितचोरवा कें चोखे दृगकोरवा
ओठवा अनुठवा कहौलनि हें।
सोनें के उखरिया मे मणि के मुसरवा
आठे चोट चउरबा घोरौलनि हे,
ओहि रे चउरवा के बान्हुशुभ करवा
सिया प्यारीक वरवा कहौलनि हे
एहि चितचोरवा के लालेलाले ठोरवा
मन मोरवा भरमौलनि हे
चितचोरवा आजु बतौलनि हे

तदुपरान्तक गीत एवंक्रम रहैछ :—

धरिअ मूसर सम्हारि अठोंगर विध भारी हे
आठहि चोट अहाँ कसि कसि मारू देखि अहाँक बल हे।
सर मंडपक चहुँ ओर घुमाओल बेटीक नजरि निहारि हे,
एहि विधि कूटत अठोंगर वर सखिसभ पढ़त गारि से अठोंगर
विध भारी हे॥

अठोंगर द्वारा कूटल अन्न केँ आमक पल्लव मे दए कंगन बाँधवाक विधान अछि जकर तात्पर्य पुत्रोत्पत्ति सँ अछि। एहि प्रसंग मे अथर्ववेद मे परिहस्त नामक कंगन सँ गर्भाधान करेवाक प्रार्थना कएल गेल अछि जकरा पुत्रक कामनाक हेतु आदिति धारण कएने छलीह।

अठोंगर कूटलाक उपरान्त वर कोहवर लए गेल जाइत छथि जतए नैंना-जोगिनी केँ विधानक संपादन कएल जाइछ। विधिकरी अपन कपार पर एक गोट बियनि राखि एक गोट लकड़ी सँ ओकरा पीटैत घरक चारू कोन मे घूमैत अछि और वर पिठार ओहि घरक चारू कोन मे लगबैत अछि। एकर पश्चात एकहि चादरि सँ वधु तथा एक गोट अन्य कन्या आच्छादित रहैत अछि तथा वर केँ वधु केँ चिह्नवाक हेतु कहल जाइछ।

वस्तुतः नैना-जोगिनक विधानक सम्बन्ध योग सँ अछि। अंतःकरणक विचार केँ जे मानस, चित्त, अहंकार तथा बुद्धिक रूप मे विभक्त अछि ओकर संतुलन केँ स्थिर रखवाक उपक्रम केँ योग कहल जाइछ जकर यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि आठ गोट अंग अछि। अन्तःकरणक शुद्धिक प्रक्रिया शोधन कार्यक द्वारा होइछ जकर शोधन, वसी, नेती, लौलकी, त्राटक तथा कपालयटी छौ गोट भेद

अछि। नैना-जोगिनक सम्बन्ध त्राटक सँ थिक। एकर विविध प्रक्रियाक प्रणाली अछि जकर सम्बन्घ नयन स्थिर करवा सँ थिक जे प्रधानतः घरक भीतर कएल जाइछ।

त्राटक प्रक्रिया मे एकटक कोनो पदार्थ कें देखल जाइछ जकरा सामभवी मुद्रा कहल जाइछ। सामभवीक सम्बन्ध शिव सँ अछि। शिव दिव्य शक्तिक ओ तत्व थिक जे मनुष्य कें शारीरिक एवं मायाक जाल सँ मुक्त कए ऊपर उठवैत अछि। एहिसँ ओकरा आत्माक प्रत्यक्ष वोध होइछ। एहि तरहक देखबा कें घेरूक-संहिता मे आत्माराम कहल गेल अछि। आत्मारामक तात्पर्य आनन्दोद्यान सँ थिक अर्थात् ओ पदार्थ आनन्ददायक थिक जकरा त्राटक मुद्रा सँ देखल जाइछ। युक्ति दीपिका मे दृष्टिसिद्धिक वर्णन सेहो अछि।

त्राटक वशीकरणक एक गोट उपक्रम थिक जकरा द्वारा दृष्टिसिद्धिक उपरान्त परोक्ष पदार्थ कें देखल जाइछ। त्राटकक प्रक्रिया लोकमध्य तेना ने प्रख्यात भेल जे उपहासास्पदें एकर नाम त्राटक पड़ल।

योगशास्त्र मे एक गोट उन्मनी मूद्राक वर्णन अछि। एहि मे नेत्र् ने तँ बन्द रहैछ ने खुलल, ने तँ श्वासा चलैत रहैछ ने बंद रहैछ तथा ध्यान और ध्येय सभटा समाप्त भए जाइछ। एहि प्रक्रिया में निरत कें नगाड़ा आदिक वाद्य शब्दहुँ धरि नहि सुनबा मे अवैछ तथा शरीर काष्टवत भए जाइछ। एहि मे चित्त तेना ने एकाग्र भए जाइछ जे मात्र ओ ओकरहिटा देखैत अछि जकरा पर ओकर ध्यान रहैछ। अतएव उन्मनी कें मनोन्मयी सेहो कहल जाइछ।

नैना-जोगिनक प्रक्रियाक संम्पादन जोगिनक द्वारा होइछ जकर सम्बन्ध चक्रपूजा सँ थिक। चक्रपूजा नैमित्तिक कर्म, स्वजन्योत्सव, देवकार्य, कुलपर्व आदि अवसर पर होइछ।

चक्रपूजा मे स्त्री कें जोगिन कहल जाइछ जे दू प्रकारक रहैछ—हठतः और प्रियतः। जबरदस्ती कोनो स्त्री कें साधनाक हेतु प्रस्तुत करवाकें हठतः

तथा ओकरे इच्छानुसार एहि निमित्त प्रयोग करवा कें प्रियतः कहत गेल अछि। बौद्ध सिद्धक साधना मे जोगिन अथवा जोइणिक बड़ विशेष महत्व छल। सरहपादक निम्न पद—

जोइणि गाढ़ालिंगसाठि वज्रिल लद्र उपसरण
तत्तपआभिअ तेहि खणे हरणे दिवअण णादिणण ।।

सँ ज्ञात होइछ जे जोगिनक गाढ़ालिंगन मे ओ सहज साधना करैत छलाह। सिद्ध गुंडुरीपादक पद—

तिअड्डा चापि जोइणि दे अंकवाली
कमल कुलिश घाट करहु बिआली।

सेहो एहि तरहक धारणाक पुष्टि होइछ। एहि सँ प्रतीत होइछ जे बौद्ध तंत्र मे साधनाक निमित्त जोगिन आवश्यक छल। योगिनी कौल मार्ग मे जोगिनक पूजाक विधानक प्रसंगक एवक्रमक वाक्य अछि :—

क्षीर हंडादि मृष्टन्तु घृतपूर्ण सुशोभनम्
पार्श्वे तु पूजयेत् सिद्धां योगिनीं गुरुमेवच।

जोगिन ६४ प्रकारक होयत छल। योगिनी कौल मार्ग मे कृतका और सहजा नामक दुई गोट पद्धति अछि। कुंडलीक साधना कें कृतका तथा जोगिनक संग समरसता मे स्थित रहबाक पद्धति कें सहजा कहल जाइछ। कृतका साधना मे जोगिन अवधूती कें कहल जाइछ और सहजा मे एक गोट वास्तविक नारीक अनुभाव होइत छल। एहि सँ ज्ञात होइछ जे अवधूती वा सुषुम्ना नाड़ी तथा नारी महामुद्रा दुहू जोगिनक अर्थ मे प्रयुक्त भेल अछि। जेकर दिग्दर्शन सिद्ध और सन्त साहित्यक कतिपय स्थल मे उपलब्ध अछि।

नाड़ीक अर्थ मे चर्यापदक निम्न पद :—

'अधराति भर कमल विकसिउ,

वतिस जोइणी सुअंग उल्हसिउ ॥

मे बत्तीस नाड़ी केँ बत्तीस जोगिन कहल गेल अछि तथा गोरखवानी मे एक दिशि तँ नाड़ीक कल्पना नौ सय जोगिनक रूप मे कएल गेल अछि और दोसर दिशि महामुद्रारूपी महाजोगिनक उल्लेख कएल गेल अछि। जायसी एक स्थल पर योगीक संग जोगिन बनवाक उल्लेखक वर्णन कएलनि अछि और दोसर स्थल पर इड़ा पिङ्गला केँ योगिनीक रूप मे परिकल्पित कएलनि अछि। सन्त साहित्य मे यद्यपि जोगिनक बड़ कम उल्लेख अछि तथापि पलटू योग पद्धति मे सुरतिक माध्यम सँ जोगिन सुषुम्ना केँ जाग्रत करबाक उल्लेख कएलनि अछि तथा जोगिन केँ अलमस्त हेवाक प्रसंग मे एहि तरहक वर्णन करैत छथि :—

भूली जग की चाल सब भई जोगिन अलमस्त

भई जोगिनी अलमस्त खबर कुछ तन की नाहीं

ह्वै गइ दसा अरूढ़ जान तजि भई विज्ञानी

भारती नभ जरि गइ जरा है पवन औ पानी

पलटू दिनकर उदय भर रजनी ह्वै गइ अस्त

भूली जग की चाल सब भइ जोगिनी अलमस्त।

तांत्रिक साधना मे जोगिनक बड़ महत्व पाओल जाइछ। पद्मवज्रक सिद्धिक कथाक प्रसंग मे कथा अछि जे सहज सुन्दरी या सुखललिता नामक एक गोट नर्तकी राज कन्या सँ हुनका ज्ञान प्राप्त भेल जे भगवान वज्रपाणि द्वारा जोगिन बनवाक उपदेशित भेलीह। दारिकपादक सहज जोगिन

चिन्ता छलीह जनिका वीणापाद दिक्षा देलथिन। कहल जाइछ जे कम्बलाम्बर पाद कें मन्त्रावती नामक एक गोट सिद्ध जोगिन सँ बैर भए गेलनि। फलस्वरूप हुनका पर ओ मारण मंत्रक प्रयोग कएल। एहि पर ओ एक कम्बलक रूप ग्रहण कए तँ लेलनि किन्तु ओ जोगिन ओहि कम्बलक प्रत्येक तार कें पृथक्-पृथक् कए देल तथा ओकर आन आन सखी जोगिन लोकनिक ओहि कम्बलक सभटा तार कें खाऽ गेल तथापि अपन सिद्धिक बल पर ओ जीविते रहलाह। महासिद्ध सबरी पादक दुइ मुद्रा लोगी और गुनीका नाम पद्मावती और ज्ञानावती छल। योगिनी तंत्र मे रेवती नामक नितान्त स्वरूपवती जोगिनक वर्णन अछि। एहि सँ निस्सृत होइछ जे तांत्रिक प्रक्रिया मे जोगिन मार्गप्रदर्शक भेला सन्ता गुरुक रूप मे मानल जाइत छलीह। चर्यापद मे गुरुवचन कें वाण तथा वज्रकुठार कहल गेल अछि। अद्वयवज्र अपन प्रेमपंचक में सदगुरु कें दूती कहलनि अछि जे मध्यस्थता कए प्रजारूपी वधू कें उपायरूप बर सँ मिलवैत अछि।

नैना-जोगिनक कार्य प्रधानत: उपर्युक्त अछि। ई अपना कें बंगालिनी कहैत अछि। प्रो० विन्टरनिजक मत थिक जे तंत्रक उद्भव स्थल बंगाल थिक तथा ओतहि सँ ई शास्त्र आसाम, नेपाल, तिब्बत तथा चीन देश मे प्रसारित भेल जकर पुष्टि निम्नलिखित वाक्य सँ होइछ :—

गौड़े प्रकाशिता विद्या मैथिले प्रबलीकृता।
क्वचित क्वचिन्महाराष्ट्रे गुर्जरे प्रलयं गता।

अतएव प्रतीत होइछ जे तंत्रक उद्भव यद्यपि बंगाल मे भेल किन्तु एकर प्रबलीकरण मिथिले मे भेल। फलत: मिथिलाक तंत्र मंत्र मे कामरूप कामाख्या तथा नैना जोगिनक नामक दोहाय देबाक परम्परा स्थापित भेल।

नैना-जोगिनक सम्बन्ध प्राय: ऐतिहासिक थिक जेकर सम्बन्ध ओडियान सँ अछि। साधनमाला सँ ज्ञात होइछ जे शवरपाद वज्र योगिनीक आराधनाक प्रवर्तन ओतहि कएलनि। साधनमाला मे कामाख्या, श्रीहट्ट, पूर्णगिरी तथा ओडियानक नाम सिद्ध पीठक रूप मे वर्णित अछि। एहि मे सँ कामाख्या तथा श्रीहट्ट असम में अछि जे त्रिपुरवाला तथा कौलमार्गक हेतु प्रशस्त अछि। मंजुश्रीमूलकल्पक अनुसार तारा मंत्रक साधनाक उपयुक्त स्थान कामाख्या थिक। बौद्ध सिद्धाचार्य सरह, नागार्जुन आदिक सम्बन्ध कामरूप सँ छल। लूइपा जनिका मत्स्येन्द्रनाथ सेहो कहल जाइछ चन्द्रद्वीपक वासी छलाह जे कौलमार्गक प्रवर्त्तक भेलाह। अभिनवगुप्तक तंत्रालोकक व्याख्या मे जयद्रथक एवंक्रमक वाक्य:—

भैरव्या भैरवात प्राप्तं योग व्याप्त ततः प्रिये।
ततसकाशतु सिद्धेन मीनाख्येन वरानने।
कामरूपे महापीठे मच्छन्देन महात्मना॥

सँ प्रतीत होइछ जे प्रारम्भ मे भैरवी कौल मार्ग केँ भैरव सँ प्राप्त कएलनि जनिका सँ मीननाथ केँ कामरूप मे प्राप्त भेल। अतएव ई मार्ग योगिनी कौल मार्गक नाम सँ सर्वप्रथम कामरूपे मे प्रख्यात भेल। शवरपाद तथा लईपादक सम्बन्ध मे तिब्बतीय परम्पराक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे लुईक शिष्य नागार्जुन तथा नागार्जुनक शिष्य शवरपाद छलाह जे समीचीन बुझना जाइछ। नागार्जुनक समय केँ प्रो० टुची दशम शताब्दी मानलनि अछि। अतएव लुईपादक समय अवश्य हुनका सँ किछु पहि-नहि छल।

गयाक प्रसिद्ध तांत्रिक स्वर्गीय बाबू लक्ष्मी प्रसाद सिंहक अप्रकाशित तंत्र-मंत्रक संग्रहमे जे श्री वीरेश्वर प्रसाद सिंहक ओतए सुरक्षित अछि कतिपय मंत्र मे कामरूप-कमच्छा, नैना-जोगिन, बंगालिन हिरिया-जिरिया

तथा जालंधर नाथ के एकहि मंत्र मे एके संगे दोहाय देल गेल अछि। मिथिलाक तंत्र-मंत्र मे प्रधानतः पार्वती, भैरव तथा नैना-जोगिन के दोहाय देवाक परम्परा अछि। एहि मे सँ जालंधरनाथ तिलोपादक गुरुपरम्परा मे अवैत छथि जनिका दशम शताब्दी मे राखल जाइछ। अतएव नैना-जोगिनक समय सेहो दशमे शताब्दी भए सकैछ।



इष्टदेवीक सन्मुख वर-वधू

असम और मिथिलाक संस्कृति, इतिहास और भाषा मे सेहो बड़ सामंजस्य अछि। दशम शताब्दीक लगभग मैथिल ब्राह्मण श्रीहट्ट मे बसि गेल छलाह। अतएव नैना-जोगिनक तांत्रिक प्रक्रियाक प्रभाव मिथिला के प्रभावित कएलक एहि मे कोनहुटा आश्चर्य नहि। मिथिला और असमक सांस्कृतिक आदान-प्रदान सेहो तँ होइतँहि रहल। एहि सँ निस्सृत होइछ जे नैना नामक एक गोट जोगिन छलीह जे तंत्र साधना मे बड़ दक्ष छलीह। अतएव

ब्रह्म-वर्चस केँ वशीकरणक हेतु नैना-जोगिनक तांत्रिक प्रक्रिया केँ मिथिला मे अपनाओल गेल जकर सम्बन्ध कामरूप सँ अछि। नैना-जोगिनक अवसर पर जे फकड़ा [1] पढ़ल जाइछ ओ एवंक्रमक रहैत अछि :—

तुहु-तुहु जनु चलु, चलु वर दौड़ल
चूड़ा अगर पँच भेटय दही अछि पौरल।
कनियाँ माय, कनियाँ माय दलान दिय दीप,
नगर हकार दिय आयल पुरहित।
कनियाँ माय जे छाती पीटय राति बहुत भेल।
जेठका बेटा डाँटि देल, जीतल काज भेल।

---

१. पँ० श्री जयकान्त झा अपन 'वाजसेनियनां विवाह पद्धति' मे नैना-जोगिनक प्रसंग मे एवंक्रमे लिखलनि अछि —

कोवरक घर मे चारु कोन पर एक एक स्त्री जोगिन बनि माथा पर बीयनि राखि हाथ मे आमक पल्लव लए ठाढ़ भए जाइत छथि। जोगिन अपना माथा पर राखल बीयनि केँ आमक पल्लव सँ बजवैत रहैत छथि। वर एक कोन मे जाय जोगिन केँ पूछैत छथि —आहाँ कतऽ सँ अयलहुँ अछि ? जोगिन—हम कामरू कामाख्या सँ अयलहु अछि, जोग लियऽ कौर दियऽ। ई कहि जोगिन निम्नलिखित मंत्र पढ़ैत छथि:—

थिकहुँ वंगालिन वशी वंगाला सुरपुर सँ अयलहु जी।
उजरा छागर करिया भेड़ा, दून्‌ मारि कैलहुँ शमसान जी॥
सूखी नदिया नाव चलावी, ऊचे-नीचे दही जमावी।
आलरि झालरि कान्हे कामरु सिर ऊपर वेनियाँ॥

गणपति देलनि घी कटोरा नौआ आमक काठी,
दश सखि मिलि शुभ-शुभ कहलनि,
माथा सिन्दूर पड़नि ।
हम बँगालिनी वसी बँगाला सुरपुर सँ आयल छी,
नीचाँ-उचाँ नाव चलावी उपर घोड़ा दौड़ावैछी,
तरहथ ऊपर दही जमावी, कोठी उपर बरद नचावी,
चुल्हा उपर सारि उपजावी, तँ जोगिनी कहावैछी ।
आवरि-झावरि कामरि माता शिर ऊपर वेनियाँ
नैना योगिनीयाँ ।
माई आब वर पड़ल योगिनियाक हाथ ।

पहिल जोगिनियाँ तोहे अपन सासु हे ।
आवे दुलहा पड़ल जोगिनियाँक बस हे ॥

दोसर कोन मे पूर्ववत वरक पूछलापर जोगिन उत्तर देथि आ' निम्न-लिखित मंत्र पढ़थि —

जमुनातीर कुञ्जबन ताहिठाम कृष्ण रहैत छथि
गोप-कनियाँ दही बेचै छथि रहिने सकै छथि
रही लय पनिवाहा बेटी पानि भरऽ जाइ ले ।

(ड.)

बाट पर ठाढ़ि बेटी वंशी बजाइ ले ।
लाज नहिं बीज बेटी मेहरी नचाई ले ॥

उपर्युक्त फकड़ा मे जोगिनक अलौकिक शक्तिक चर्चा कएल गेल अछि जे सिद्धिक द्वारा प्राप्त होइछ। निम्नलिखित दोसर फकड़ा एहि तरहक अछि:—

पाँच बहिनि हम योगिनी छलौंह,
वेदा नाम सहोद्रा छलौंह,
टूटल गाछ पनुकावै छलौंह,
सुखाएल नदी बहबै छलौंह,
तें हम योगिनी कहबैत छलौंह,
आवरि, झावरि कामरू माता

आलरि झालरि कान्हे कामरु सिर उपर बेनियाँ।
दोसर जोगिनियाँ तोहे पितिया सासु हे॥
आबे दुलहा पड़ल जोगिनियाँक बस हे॥

तेसर कोन मे वरक पुछला पर जोगिन पूर्ववत उत्तर देथि आ निम्नलिखित मंत्र पढ़ैत—

रहीं लय पनबहा बेटी पानि भरऽ जाई ले।
बाट पर ठाढ़ि बेटी वंशी वजाई ले॥
होइहें जवान वेटी ससुरा जाइ ले।
आलरि झालरि कान्हे कमरु सिर उपर वेनियाँ॥
तेसर जोगिनियाँ तोहें ददिया सासु हे।
आवे दुलहा पढ़ल जोगिनियाँक बस हे॥

शिर उपर वेनियाँ नयना योगिनीयाँ ।
माई आब वर पड़ल योगिनियाँक हाथ ॥

उपर्युक्त फकड़ा मे अपन परिचयक प्रसंग में अपना कें पाँच बहिनि तथा वेदाक सहोद्रा कहैत अछि। निम्नलिखित तेसर फकड़ाक सम्वन्ध त्राटक योग तथा वशीकरण सँ अछि : –

चारिम कोन मे-जतय कनियाँ सेहो बैसल रहै छथि। वरक पुछला पर जोगिन पूर्ववत उत्तर दय निम्नलिखित मंत्र पढ़ति—

काँच कड़चो काटि कऽ बंगला घर छारि कऽ, ईहो लट झाड़ि कऽ ईहो पट झाड़ि कऽ।

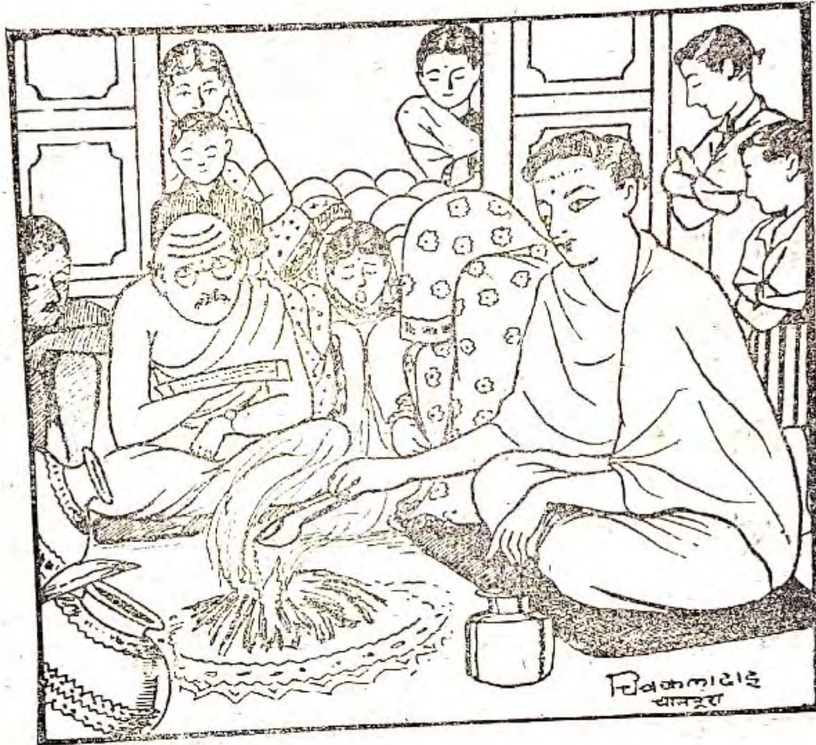
एति-एति रात पिया कहाँ सँ आयल छी, राहड़िक खेत खुटरौना सँ आयल छी ॥

हाथ मे टुनटुन पैर मे काड़ा नैना जोगिनियाँ कर दतमनियाँ बाम छौ कनियाँ दहिन छौ सारि।

हृदय बिचारि पकड़ि लिय बांहि। आलरि झालरि···चारिम जोगनियाँ तोहें ननियाँ सासुहे ॥

चारू कोन पर बर पिठार सँ थप्पा दय आरतिक पात साटि दैत छथि। ओ जीगिनक संग उपस्थित स्त्रीसमाज उपर्युक्त मंत्रक पाठ उच्चावर सँ करैत छथि। चारिम कोन मे मत्र समाप्तिक बाद वर कन्या कें बाँहि पकड़ि कए उठा लैत छथि आ उपस्थित स्त्री समाज वर आ कनियाँ कें मंडप पर पहुँचा दैत छथि। तदुत्तर पुरोहितक आदेशानुसार कार्य आरम्भ होइछ।

काँच बाँस काटि कए, वंगला घर छाड़ि कए,
ई लट झाड़िकए, ओ लट झाड़ि कए,
हाथ मे टाम-टुम, पायर मे काड़ा,
एके पटोर तर दुई कुमारी,



चतुर्थी कर्म

बाम अछि कनियाँ दहिन अछि सारि,
हृदय विचारि वर लिय उठाए,
आवरि झावरि कामरू माता,
शिर ऊपर वेनियाँ नैना जोगिनियाँ।
माई आब वर पड़ल जोगिनियाँक हाथ ॥

एवंक्रमें चारिम फकड़ाक सम्बन्ध पूर्णतः वशीकरण सँ थिक जे एहि तरहक अछि :—

कागजक हम पुरिया बनाए,
ताहि ऊपर काजर पारि,
ओहि काजर कें लड्डु बेसाहि,
पैयाँ परति दिन जाए,
के कूटत, के पीसत, के भरत पानि,
सासू कूटत, ननद पीसत, दियर भरत पानि,
दुल्हा रुचि रुचि रान्हत,
खायत मोर कनियाँ रानी ।
आवरि, झावरि कामरु माता,
शिर ऊपर बेनियाँ नैयना जोगनिया,
माई आव वर पड़ल जोगिनियाँक हाथ ।

उपर्युक्त गीत मे गार्हस्थ्य जीवनक उलझन मे स्त्री जीवनक कल्पनाक दिग्दर्शन होइछ ।

नैना-जोगिनक विधक अवसर पर निम्नलिखित गीत गेवाक प्रचलन अछि :—

१

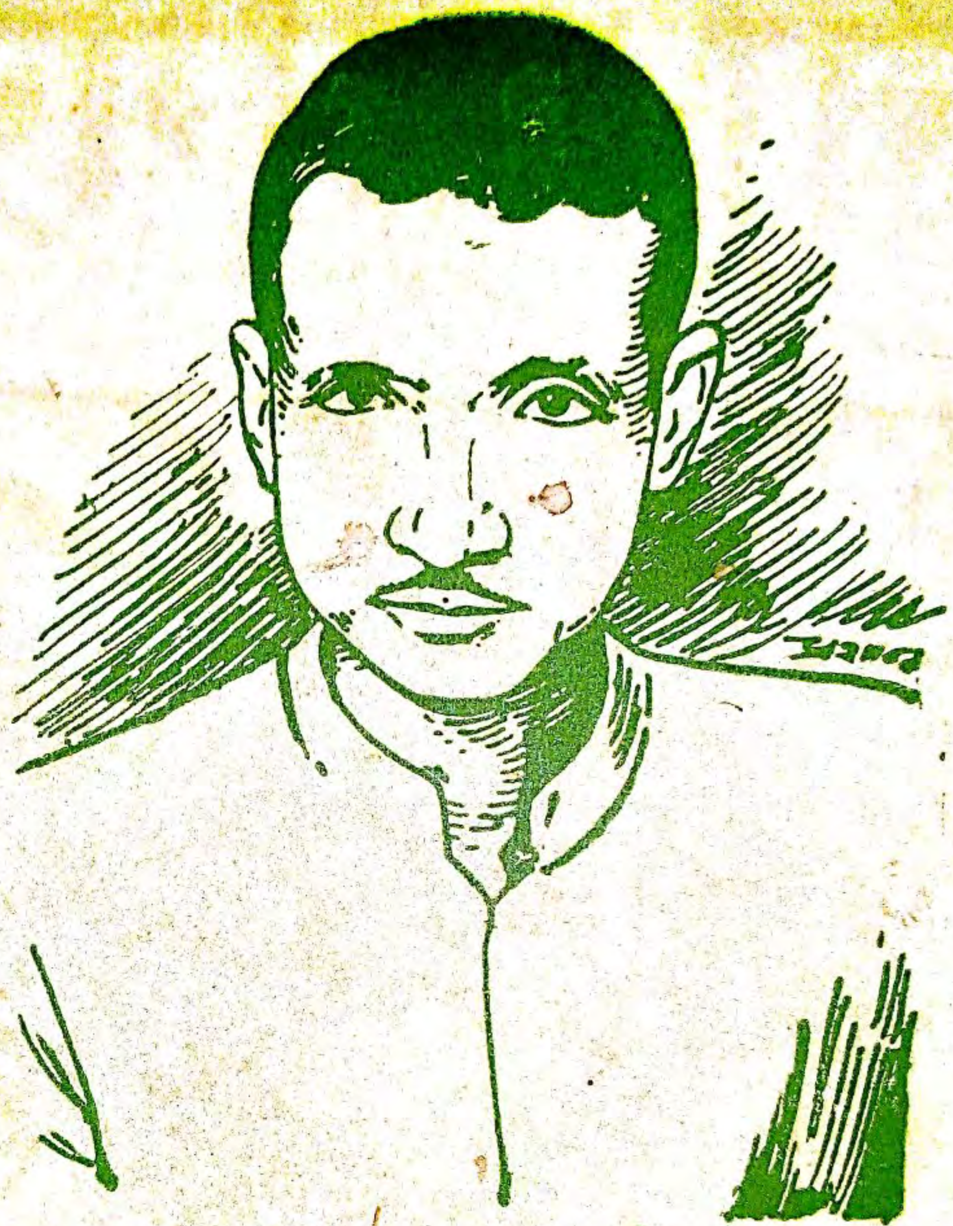
चानन चकमक चानन गाछ
चानन ढोरल चारु कात
आगुल (अगल) वगुल गुगुल के धूपे धूप
चल हे सखि सब कोबर जाइ

कोवर गेने वड़ अनुराग
बैसक देलनि मृगक छाल
एकहि पटोर तर दुई कुमारि
बाम छौ कनियाँ दहिन छौ सारि
हृदय विचारि कए लिए उठाय।

२

काली कनक पसारँ ले
नयना जोग बेसाहै ले
नयना कोना आइ लिय'
सोलहो कला जोग लाई लिय'
एक कला जोग ससरँ ले
मनहि विद्यापति गाओल
जोगिन जोग जनाओल।





लेखक